हिंदी विभाग

“अरुणिमा”

सितंबर-२०२०

सितंबर२०२०

प्रोग्रेसिव एज़्युकेशन सोसायटी का

मॉडर्न कला,विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय (स्वायत्त)

हिंदी विभाग

द्वारा प्रकाशित

"अरुणिमा"

सितंबर २०२०: हिंदी दिवस विशेषांक

हिंदी दिवस की अशेष शुभकामनाएँ

प्रकाशक :
प्रा. शामकांत देशमुख,
डॉ. राजेंद्र झुंजारराव
संपादक : डॉ. प्रेरणा उबाळे
सहायक : अनिसा शेख

हिंदी दिवस

१)

अस्वस्थ श्वास

मिल जाता हूँ अक्सर सिसकते
बच्चों से....
फॅमिली कोर्ट में।
जिनके मां-बाप मिलते हैं कोर्ट
में
हर तारीख पर।
राह देख रहे हैं, ... डिव्होर्स
की।
मेरे मन का मात्र कोलाहल
बढता है
बच्चों की अंतस्थ पुकार से।

मन का कोलाहल और बढता
है
जब सिग्नल पर,
कार के काच पर टकटक
करके,
गुलाब के फूल बेचते,
नन्हे बच्चे...भूखे .. प्यासे... !
और सिग्नल के नीचे
तपती सड़क पर, बैठी उनकी
माँ !

मन का कोलाहल और बढता
है,
जब फूटपाथ पर ढोल के
आवाज पर
देखता हूँ बच्चों के टेढे नाच
चाँद पैसों के लिए।
और, तीखी मिर्ची के साथ
उनका वडापाव खाना ।

मन में उठती हैं तरंगें सवालों के
कैसी होगी उनकी कल की
सुबह
और
फिर आनेवाली और एक
सुबह.....!

-दिनकर चौगुले
द्वितीय वर्ष, एम. ए. हिंदी साहित्य

२)

हिंदी

हिंदी मेरे रोम-रोम में,
हिंदी में मैं समाई हूँ,
हिंदी की मैं पूजा करती,
हिंदुस्तान की जाई हूँ
सबसे सुंदर भाषा हिंदी,
ज्यों दुल्हन के माथे की बिंदी,
सूर, जायसी, तुलसी कवियों
की,
सरित-लेखनी से बही हिंदी
हिंदी से पहचान हमारी,
बढ़ती इससे शान हमारी,
माँ की कोख से जाना
जिसको,
माँ, बहना, सखि-सहेली हिंदी
निज भाषा पर गर्व जो करते,
छू लेते आसमाँ न डरते,
शत-शत प्रणाम सब उनको
करते,
गर्व.. हमारा अभिमान है हिंदी
हिंदी मेरे रोम-रोम में,
हिंदी में मैं समाई हूँ,
हिंदी की मैं पूजा करती,
हिंदुस्तान की जाई हूँ
हिंदुस्तानी हैं हम, गर्व करो
हिंदी भाषा पर,
उसे सम्मान दिलाना और देना
कर्तव्य हैं हम पर ।।
खत्म हुआ विदेशी शासन,
तोड़ दो अब उन बेड़ियों को ।।
खुले दिल से अपनाओ इस
खुले आसमां को,
लेकिन ना छोड़ो धरती माँ के
प्यार को ।।
हिंदी हैं राष्ट्रभाषा हमारी,
इस पर करो न्यौछावर जिंदगी
सारी।।

संकलन - शबनम खातून
कक्षा- द्वितीय वर्ष, एम.ए.हिंदी साहित्य

३)

"प्यारी हिंदुस्तानी"

हम है हिंदुस्तानी,
हिंदी भाषा हमको प्यारी है,
इस भाषा पर सारी दुनिया
भारी-भारी है,
हम है हिंदुस्तानी,
हिंदी भाषा हमको प्यारी है,
चारों द्वीपों की दिशाओं में
जो गूँजे अभियान,
राम-कृष्ण की वाणी है और
गीता का ज्ञान,
किसके क्षमता होगी उसे हराए
न्यारी-न्यारी है,
हम है हिंदुस्तानी,
हिंदी भाषा हमको प्यारी है।
गंगा-सीता है जो है उनका
सम्मान,
उस भाषा के हम वासी हैं,
हैं हमको अभिमान।
हम ना भूल सकेंगे उसको
जब तक जान हमारी हैं,
हम है हिंदुस्तानी,
हिंदी भाषा हमको प्यारी है।
विषयों की वाणी है
कवियों का सम्मान,
प्रेम भाव का पाठ पढ़ाती
देती सबका ज्ञान,
इसकी ख़ुशबू से महके
ये प्यारी-प्यारी है,
हम है हिंदुस्तानी,
हिंदी हमको प्यारी है।

हिंदी हमको प्यारी हैं,
भाषा हमारी न्यारी है।

- शमिम खान
कक्षा- द्वितीय वर्ष, एम. ए. हिंदी साहित्य

४)

"शुभ वरदान"

हिंदी हमारी आन है हिंदी
हमारी शान है,
हिंदी हमारी चेतना वाणी का
शुभ वरदान है,
हिंदी हमारी वर्तनी हिंदी हमारा
व्याकरण,
हिंदी हमारी संस्कृति हिंदी
हमारा आचरण,
हिंदी हमारी वेदना हिंदी हमारा
गान है,
हिंदी हमारी आत्मा है भावना
का साज़ है,
हिंदी हमारे देश की हर तोतली
आवाज़ है,
हिंदी हमारी अस्मिता हिंदी
हमारा मान है।,
हिंदी निराला, प्रेमचंद की
लेखनी का गान है,
हिंदी में बच्चन, पंत, दिनकर
का मधुर संगीत है,
हिंदी में तुलसी, सूर, मीरा
जायसी की तान है।,
जब तक गगन में चांद, सूरज
की लगी बिंदी रहे,
तब तक वतन की राष्ट्रभाषा ये
अमर हिंदी रहे,
हिंदी हमारा शब्द, स्वर व्यंजन
अमिट पहचान है,
हिंदी हमारी चेतना वाणी का
शुभ वरदान है।
संकलन-रोहिणी चव्हाण
कक्षा-द्वितीय वर्ष, एम. ए.
हिंदी साहित्य

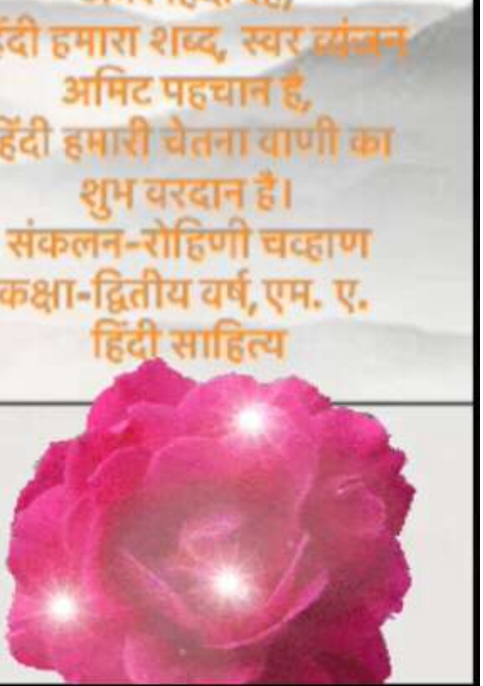

५)

नम्रता विटकर
कक्षा- तृतीय वर्ष(कला)

६)

'हिंदी का सम्मान'

हिंदी का सम्मान करो,
यह हमारी राजभाषा,
मिलाती देशवाशियों के दिलों
को यह,
पूरी करती अभिलाषा।

देखो प्रेमचंद और भारतेन्दु का
यह हिंदी साहित्य,
जो लोगो के जीवन में ठहाको
और मनोरंजन के रंग भरते
नित्य ।

हिंदी भाषा की यह कथा —
पुरानी लगभग एक हजार वर्ष,
जो बनी क्रांति की ज्वाला तो
कभी स्वतंत्रता सेनानियों का
संघर्ष ।

आजाद भारत में भी
इसका कम नहीं योगदान,
इसलिए हिंदी दिवस के रुप में
इसे मिला यह विशेष स्थान ।

विनती बस यही हिंदी को
ना दो तुम दोयम दर्जे का मान,
हिंदी से सदा करो प्रेम
तुम दो इसे विशेष सम्मान ।

रोज मनाओ तुम हिंदी दिवस
बनाओ इसे अपना अभिमान,
हिंदी है हमारी राजभाषा
इसलिए दो इसे अपने हृदयों में
विशेष स्थान ।

अंग्रेजी की माला जपकर
ना करो हिंदी का अपमान,
आओ मिलकर सब प्रण ले
नित्य करेंगे हिंदी का सम्मान ।

मूल कवि - योगेश कुमार सिंह
संकलन- अनिसा अ.शेख़
कक्षा- द्वितीय वर्ष,एम. ए.
हिंदी साहित्य

"अरुणिमा भित्तिपत्रिका"

(2016- 17 से 2019-20 तक)

हिंदी विभाग

“अरुणिमा”

अक्टूबर-२०२०

प्रोग्रेसिव एज़्युकेशन सोसायटी का

मॉडर्न कला, विज्ञान और वाणिज्य महाविद्यालय (स्वायत्त)

पुणे-४११००५, महाराष्ट्र

हिंदी विभाग

द्वारा प्रकाशित

" अरुणिमा"

(मासिक पत्रिका)

अक्टूबर : २०२०

हिंदी

प्रकाशक :

प्रा. शामकांत देशमुख,

डॉ. राजेंद्र झुंजारराव

संपादक: डॉ. प्रेरणा उबाळे

सहायक: अनिसा शेख़

1. कविता : गड्ढा

आफशा मशायक,
प्रथम वर्ष हिंदी , कला

मेरी राह में एक गड्ढा
आया.........
सुना था, समझदार लोग कहा
करते थे
और
धैर्यवान, बलवान लोग सुन लिया
करते हैं।
वह बात कुछ ऐसी थीं..,
जिसे हर कोई किया करता था।
" कहते थे -- राह में कोई गड्ढा
आया, तो..,
उस गड्ढे के उपर से छलांग
लगाकर उस पार चले जाओ।
मंजिल के पास जाने का उसे पाने
का रास्ता मिलेगा। मंजिल खुद्द
चलके आएँगी। "
जैसे मैने बताया...!
एक दिन गड्ढा मेरे सामने आया,
मै भी छलांग लगाने ही वाली थी ,
कि न जाने.....,
कैसे पर एक अजिबीयत मन-ए-
जेहेन में उठी.....
ना चाहते हूए भी छलांग-ए- मंजिल
रास्ते से बेखबर चाहत खुद में बदल
गई।
अंदर अंधेरा काफी घना था,
तनहाइयों से तनतना था,
अभी तक तो उजाले की लपेटी
चादर थी।
खुद का नूर कहीं टोपी में गुम हुआ
था,
काले खौफनाक अंधेरे मे टोपी कहीं
लापता-सी हो गई..., चादर भी
टोपी को ढूंढ़ने गूमशुदा रो दी..।

अब तक उजालों का सिलसिला-
ए- कशिश देखा था,
अंधेरे ने खुदा-ए-चाहत बना दिया।
गड्ढे में गिरने के बाद पता
चला .....
उस गड्ढे का कोई अंत न था,
ना ही उसकी कोई गहराई थी, ना
ही कोई मैं उसकी अपनी या पराई
थी।
बस वह लेजाए जा रहा था।
उस खौफनाक अंधेरे मे कुछ-ना-कुछ
दिए जा रहा था।
"जेहन नाफरमानी करते हुए कूदा
था...,
दिल मेहमानगी कबूल किए जा रहा
था। "
हर वो चीज जो मुझमे मुझे फसाए
थी ,
हर वो कोशिश जो वक्त को समेटे
रहने , उसे गले लगाए थी।
"उस वक्त दिल सच में
धडकन से मिला था,
वो आखरी पेहेर की फर्माईश थी।
"
आखिर इन सबके बाद गड्ढे ने
दुनिया खूब दिखाई थी।
"जब जमीन पर पड़ा कदम-ए-
अश्क मेरा,
तब मंजिल मुझे गले लगाए थी। "
यहीं शायद खुदा की आजमाईश
थी।
यहीं शायद खुदा की आजमाईश
थी।

2. कविता : साया
दिनकर चौगुले,
एम. ए. हिंदी साहित्य, द्वितीय वर्ष

साया. ..

मेरे साथ चलता है
रूकता है मेरे साथ
मेरा साया...
मेरा हमसफर
मेरा दोस्त है।

पैरवी करता है मेरी
पर दिलमें रहता है
मेरे अंतर्मन की
हर बात बयान करता है ।
मेरे मन के रंग
और तरंग है
मेरा साया...
मेरा हमसफर
मेरा दोस्त है ।

स्वीकार्य हूँ मैं उसको
मैं जैसा हूँ वैसा
मेरे जीने के
भाव भुने तरीके के साथ...
वो होता है आईना मेरा...
कहीं भी. .. कभी भी
पहचानता है वो मुझको
और मैं उसको....
मेरा साया...
मेरा हमसफर
मेरा दोस्त ... है ।

खोज करता है खुद की... मुझमें
और मैं ढूंढता हूँ मुझको... उसमें
हमेशा..
कभी पूछा मैंने उसको
तो कहता है मेरे सामने
मेरी ही कविता
मेरा साया...
मेरा हमसफर
मेरा दोस्त ... है।

दी है उसने मुझे
मनमानी करने की
पूरी छूट..
मेरे चाल -चलन से
नहीं होता कभी विचलित
मानो कि ... ऐसे ही होगा
उसको... पहले से पता है...
मेरा साया...
मेरा हमसफर
मेरा दोस्त ... है ।

पर मुझे सुनता है
मैंने न कही बातों को समझता है
महसूस करता है वो
अपना अस्तित्व मुझमें..
वो है ..
तो ही मैं हूँ...
मेरा साया...
मेरा हमसफर
मेरा दोस्त ... है ।

3. कविता : खुशी के रहस्य

शमीम खान
एम. ए. हिंदी साहित्य, द्वितीय वर्ष

वे हमारे दिमाग पढ़ते हैं
अपने -अपने आईने में
आसान भाषा मे बताते हैं
खुशी के रहस्य।

स्त्रियाँ पेश करती हैं
सपनों की एक टोकरी
जिसके सभी फल हमेशा से
मीठे होते हैं
उनमें से उठाया जा सकता
है, कोई एक
निचोडा जा सकता है ह्रदय की
तरह।।

मनुष्य उन्हीं विचारों पर
चलता है।
जो बना दिये गए हैं मनपसंद
तुम भी खाने लगते हो सबकी
पसंद का खाना
पहनते हो कपड़े दूसरे के रुचि
के
बाहर आता है किसी दूसरे का
चेहरा
घरो में किसी और को बेचे जाने
की चीजें सजती हैं
किसी और के सामने आते हैं नींद में

तुम भूल चुके होते हो अपनी आग
जंगल का वह हिस्सा
जहाँ पहली हवा गुजरी थी
सांसो का बहना शुरू हुआ था
फूलों की एक घाटी में
छूट गए थे रंग।

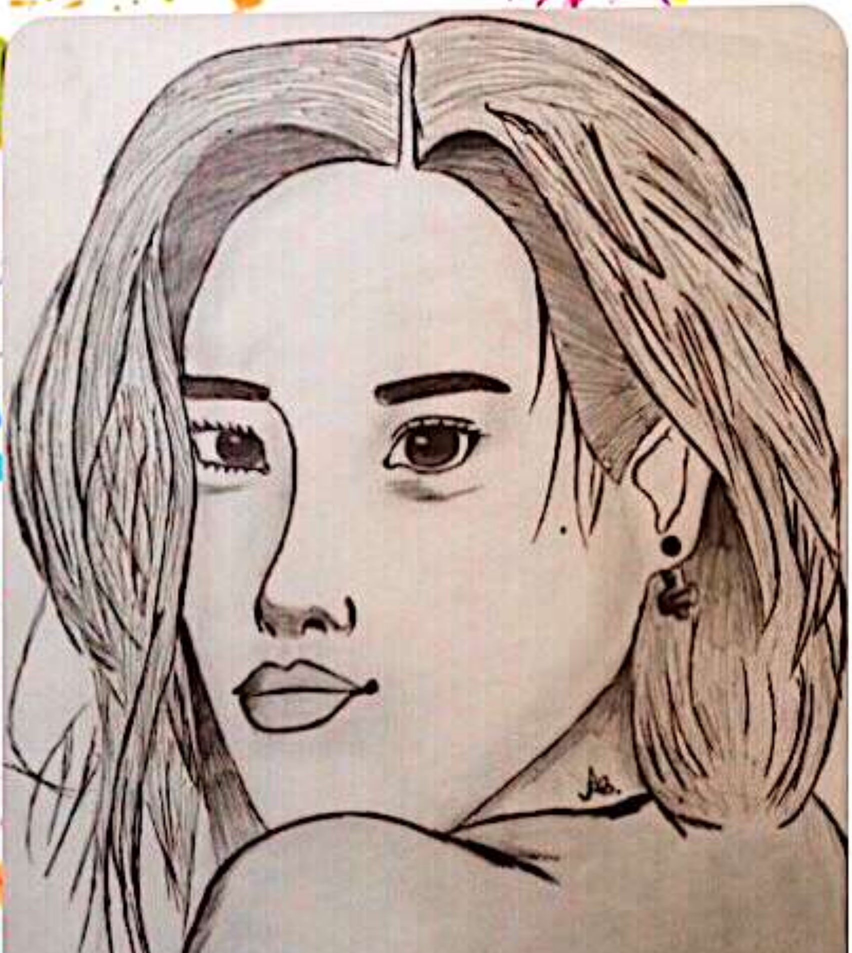

अश्विनी दाभाडे
द्वितीय वर्ष कला, सामान्य हिंदी